ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 58-62

पं.गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' : राष्ट्रचेतना के ओजस्वी कवि

जयराम जय

स्वतंत्र साहित्यकार एवं शोधकर्ता कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Received: 02/08/2026

Revised: 18/09/2026

Published: 02/10/2026

E-Mail
jairamjay2011@gmail.com

DOI
[XXXXXXXXXXXXXXXXXX]

Copyright
© The Authors. This article is published by Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika.

How to Cite
Jay, J. (2026). पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' : राष्ट्रचेतना के ओजस्वी कवि. Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika, 1(1), 58–62.

जयराम जय (2026)। पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' : राष्ट्रचेतना के ओजस्वी कवि। भारतीय नव शोध अध्ययन पत्रिका, खंड 1, अंक 1, अक्टूबर–दिसंबर 2026, पृ. 58–62।

सारांश/ Abstract

प्रस्तुत लेख में पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' के साहित्यिक व्यक्तित्व तथा उनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक सरोकारों का विवेचन किया गया है। सनेही जी हिंदी साहित्य के ऐसे ओजस्वी कवि थे, जिन्होंने कविता को केवल भावाभिव्यक्ति और मनोरंजन का माध्यम न मानकर राष्ट्रीय जागरण, सामाजिक परिवर्तन और जनचेतना का सशक्त साधन बनाया। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी, शिक्षक के रूप में उनका योगदान तथा 'सनेही मंडल' और 'सुकवि' पत्रिका के माध्यम से साहित्यिक प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देना उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करता है। उनकी रचनाओं में देशप्रेम, स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान, सामाजिक विषमता का विरोध, जातिगत भेदभाव के विरुद्ध आवाज और मानवीय समानता की भावना प्रमुखता से दिखाई देती है। 'त्रिशूल' उपनाम से रचित उनकी देशभक्तिपूर्ण कविताओं में ओज, विद्रोह और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रभावशाली स्वर मिलता है। उन्होंने छंद-साधना, काव्य-सौंदर्य और जनसामान्य की संवेदनाओं का समन्वय करते हुए साहित्य को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा। इस प्रकार पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' का साहित्य राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, मानवीय गरिमा और जनजागरण की प्रेरक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

मुख्य शब्द : **पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' , राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति, सामाजिक सुधार, हिंदी साहित्य, जनजागरण**

ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 58-62

"जो भरा नहीं है भावों से,बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं, वह पत्थर है,जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।" [1]

1.1 भूमिका

इन अमर पंक्तियों के रचनाकार पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (21 अगस्त 1883–20 मई 1972) हिंदी साहित्य के उन विरल रचनाकारों में हैं, जिनके लिए कविता केवल सौंदर्य-बोध या मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय स्वाभिमान और परिवर्तन का सशक्त उपकरण थी। वे कवि होने के साथ स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक और संपादक भी थे। ब्रजभाषा की दीर्घ परंपरा के बीच खड़ी बोली में ओज, माधुर्य और छंद-सौंदर्य से संपन्न काव्य रचकर उसे कवि-सम्मेलनों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। [1,2,3]

1.2 जीवन एवं साहित्यिक यात्रा

उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद के हड़हा गाँव में जन्मे सनेही जी ने बहुत कम आयु में अध्यापन आरंभ कर दिया था। मात्र सोलह वर्ष की अवस्था में वे एक मिडिल स्कूल में शिक्षक बन गए। साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले सहकर्मियों की प्रेरणा से उनका रुझान काव्य-सृजन की ओर हुआ। उनकी प्रतिभा की तीक्ष्णता का एक रोचक प्रसंग प्रचलित है। विद्यालय के निरीक्षण अथवा मरम्मत-कार्य के सिलसिले में एक अभियंता वहाँ पहुँचे। उनकी दृष्टि सनेही जी की मेज पर रखी उर्दू की छंदशास्त्रीय पुस्तक पर पड़ी। उन्होंने पूछा—'इसे कौन पढ़ता है?' सनेही जी ने सहजता से उत्तर दिया—'मैं ही पढ़ता हूँ।' [1,2,3]

अभियंता ने उनकी योग्यता परखने के लिए उर्दू कविता की एक पंक्ति सुनाकर उसका वज़्न बताने को कहा। सनेही जी ने न केवल उसका वज़्न बताया, बल्कि तत्काल उसी पर गिरह भी लगा दी। यह प्रसंग उनके बहुआयामी काव्य-ज्ञान और छंद-साधना का परिचायक है। हिंदी के साथ उर्दू काव्य-परंपरा और छंद-विधान की उनकी समझ ने उनकी रचनात्मकता को विशिष्ट विस्तार दिया।

सन् 1921 तक वे विभिन्न विद्यालयों में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। किंतु स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण अंततः उन्हें अध्यापन से त्यागपत्र देना पड़ा। इसके बाद उनका जीवन कविता, जेल-यात्रा और राष्ट्रीय जागरण के बीच निरंतर सक्रिय रहा। वे मानते थे कि कविता यदि जनता की चेतना को स्पर्श न करे तो उसकी सामाजिक उपयोगिता अधूरी है। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'सनेही मंडल' की स्थापना की। अवध क्षेत्र के विभिन्न जनपदों तक इसका विस्तार हुआ और अनेक नवोदित कवि इस काव्य-परंपरा से जुड़े। [1,2]

1.3 काव्य-साधना और साहित्यिक योगदान

देशभक्ति की कविताओं के लिए उन्होंने 'सनेही' के अतिरिक्त 'त्रिशूल' उपनाम का भी प्रयोग किया। 'त्रिशूल' नाम ही उनके विद्रोही तेवर और राष्ट्रीय चेतना का संकेत देता है। हास्य-व्यंग्य के लिए वे 'तरंगी', 'अलमस्त', 'लहर-लहरपुरी'

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 58-62

आदि उपनामों से भी लिखते थे। इस प्रकार एक ही रचनाकार के भीतर प्रेम, श्रृंगार, भक्ति, हास्य, व्यंग्य, राष्ट्रीयता और सामाजिक प्रतिरोध की अनेक धाराएँ एक साथ प्रवाहित होती थीं। [1,2]

सनेही जी का साहित्यिक व्यक्तित्व केवल रचना तक सीमित नहीं रहा। सन् 1928 में उन्होंने 'सुकवि' पत्रिका का संपादन और प्रकाशन प्रारंभ किया। यह पत्रिका नवोदित कवियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बनी। उनके प्रयासों से अनेक कवि साहित्य की मुख्यधारा से जुड़े। उनके द्वारा तैयार की गई यह काव्य-पीढ़ी राष्ट्रीय जागरण में सहभागी बनी। आज कवि-सम्मेलनों की जो लोकप्रिय और जनोन्मुख परंपरा दिखाई देती है, उसके विकास में 'सनेही मंडल' की काव्य-गोष्ठियों की भूमिका को भी महत्वपूर्ण माना जाता है। [1,2]

1.4 राष्ट्रीय चेतना और जन-जागरण

सनेही जी की कविता का मूल स्वर जन-जागरण का स्वर है। प्रेम और श्रृंगार की कोमलता के साथ राष्ट्रीयता का ओज, सामाजिक विषमता के विरुद्ध आक्रोश और परिवर्तन की आकांक्षा उनकी रचनाओं में साथ-साथ दिखाई देती है। उनके प्रमुख काव्य-संग्रहों में 'प्रेम पचीसी', 'गप्पाष्टक', 'कुसुमांजलि', 'कृषक क्रन्दन', 'त्रिशूल तरंग', 'राष्ट्रीय मंत्र', 'संजीवनी' और 'राष्ट्रीय वीणा' आदि उल्लेखनीय हैं। [1,2,3]

1.5 सामाजिक चेतना और समाज-सुधार

समाज-सुधार के प्रश्नों पर भी उनकी दृष्टि अत्यंत सजग थी। महात्मा गांधी के अछूतोद्धार आंदोलन के दौरान उन्होंने कविता को सामाजिक चेतना का माध्यम बनाया। उनकी प्रसिद्ध घनाक्षरी आज भी जातिगत भेदभाव के विरुद्ध एक तीखा प्रश्न बनकर सामने आती है-

"एक ही विधाता के अमृत-पुत्र, एक देश,
कुछ यों अपूत, कुछ पूत कैसे हो गये?
सबकी नसों में रक्त एक ही प्रवाहित है,
कुछ देवद्रुत, कुछ भूत कैसे हो गये?"

इस कविता का महत्व केवल तत्कालीन सामाजिक संदर्भ तक सीमित नहीं है। मनुष्य को जन्म के आधार पर बाँटने वाली मानसिकता पर सनेही जी का यह प्रश्न आज भी उतना ही प्रासंगिक है। वे भारतीय परंपरा के भीतर से ही समानता और मानवीय गरिमा की आवाज बुलंद करते हैं।

1.4 स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति संवेदना

उनकी राष्ट्रीय चेतना का एक और रूप स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति उनकी संवेदना में दिखाई देता है। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान के बाद उन्होंने देशवासियों को सांत्वना और संघर्ष का संदेश देते हुए लिखा-

"सच्चे आशिकों के है मुक़द्दर में सूली लिखी,
तुम न दुखाओ दिल, उनको दुखाने दो।

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 58-62

रोके रहो आहें यह अपनी फलक- सोज,
अगर सताता है फलक तो सताने दो।"

यहाँ व्यक्तिगत शोक राष्ट्रीय संकल्प में रूपांतरित हो जाता है। सनेही जी की कविता आँसू पोंछने के साथ संघर्ष की लौ भी जलाती है।

1.5 पत्रकारिता और वर्तमान-बोध

कानपुर से प्रकाशित दैनिक 'वर्तमान' से भी उनका जुड़ाव रहा। उसके उद्देश्य-वाक्य के रूप में उनकी ये पंक्तियाँ प्रकाशित होती थीं-

"शानदार था भूत, भविष्यत भी महान है,
अगर सँभालें आप उसे जो वर्तमान है।"

इन पंक्तियों में इतिहास, भविष्य और वर्तमान के बीच उत्तरदायित्व का सुंदर संबंध स्थापित होता है। अतीत के गौरव और भविष्य की आकांक्षा के बीच वर्तमान को सँभालने का संदेश आज भी उतना ही सार्थक है।

1.6 कविता, जीवन और सामाजिक उत्तरदायित्व

सनेही जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता शायद यही थी कि उन्होंने साहित्य को जीवन से अलग करके नहीं देखा। वे स्वयं शिक्षक थे तो शिक्षा से जुड़े रहे, स्वतंत्रता सेनानी थे तो राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े रहे, संपादक थे तो साहित्यिक प्रतिभाओं को मंच देते रहे और कवि थे तो जनता की पीड़ा तथा आकांक्षाओं को स्वर देते रहे। उनकी कविता में वैदुष्य है, किंतु वह केवल पांडित्य-प्रदर्शन नहीं; उसमें जीवन का ताप और संघर्ष की बेचैनी भी है। इसी कारण उनका विद्रोह नारे में सीमित नहीं होता, बल्कि संवेदना और विचार के साथ कविता में रूपांतरित होता है।

जीवन के अंतिम दिनों में कानपुर के उर्सला अस्पताल में रहते हुए उन्होंने जो छंद लिखा, वह उनके समूचे साहित्यिक जीवन का मानो आत्मकथ्य बन गया-

"करने चले तंग पतंग मुझे जल,
मिट्टी में मिट्टी मिला चुका हूँ।
तम-तोम का काम तमाम किया,
जगती को प्रकाश में ला चुका हूँ।
नहीं चाह 'सनेही' सनेह की और,
सनेह में जी मैं जला चुका हूँ।
बुझने का मुझे कुछ दुःख नहीं,
पथ सैकड़ों को दिखला चुका हूँ।"

ISSN:
[xxxxxxxxxx]
Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 58-62

इन पंक्तियों में एक साधक-कवि का आत्मविश्वास है, जिसने अपने हिस्से का प्रकाश समाज को देने के बाद जीवन की संध्या को सहजता से स्वीकार किया। यही सनेही जी की रचनात्मक साधना का सार भी है—स्वयं जलना और दूसरों के लिए राह प्रकाशित करना।

1.7 उपसंहार

हिंदी साहित्य के इतिहास में पं. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' का मूल्यांकन केवल राष्ट्रीय कवि या छंद-साधक के रूप में करना उनके व्यक्तित्व को सीमित करना होगा। वे एक ऐसे वैदुष्यपूर्ण विद्रोही रचनाकार थे, जिन्होंने कविता को जनचेतना से जोड़ा, नवोदित प्रतिभाओं को मंच दिया और साहित्य को सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्तरदायित्व से संपृक्त किया। उनकी कविता में देशप्रेम भावुकता नहीं, कर्म का आह्वान है; विद्रोह अराजकता नहीं, अन्याय के विरुद्ध नैतिक प्रतिरोध है; और स्नेह केवल निजी अनुभूति नहीं, समूचे समाज के प्रति आत्मीयता है।

इसीलिए 'सनेही' आज भी केवल हिंदी साहित्य के इतिहास का एक नाम नहीं हैं। वे उस परंपरा के प्रतिनिधि हैं जो मानती है कि कवि का हृदय तभी सार्थक है, जब उसमें भावों की रसधार के साथ अपने देश, समाज और मनुष्य के प्रति प्रेम भी प्रवाहित हो।

1.8 लेखक परिचय

जयराम जय गीत-नवगीत, ग़ज़ल,छंद,कहानी, कविता,आलेख,समीक्षा के सक्रिय रचनाकार हैं। हिन्दी में परास्नातक तथा पत्रकारिता और वास्तुविद्या में शिक्षित जय की कृति 'ज़िंदगी गीत है' प्रकाशित है, जबकि 'छंद की छाँव में' सवैया-घनाक्षरी संग्रह प्रकाशनाधीन है। उनकी रचनाएँ विभिन्न साझा संकलनों में प्रकाशित हुई हैं। वे 'हमारा शहर', 'शेषामृत' और 'धरती बचे प्रदूषण से' जैसी पत्रिकाओं तथा कई संकलनों के संपादन-सहयोग से जुड़े रहे हैं। उत्तर प्रदेश आवास विकास परिषद से वास्तुविद् अभियंता के रूप में सेवानिवृत्त होकर वे स्वतंत्र लेखन में सक्रिय हैं।

1.9 संदर्भ सूची

1. हिन्दवी. (तिथि उपलब्ध नहीं). "गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का परिचय।" हिन्दवी / रेख़्ता फ़ाउंडेशन. हिन्दवी पर परिचय (अभिगमन: 10 अक्टूबर 2026)।
2. उपेन्द्र. (2012). गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान. पुस्तक-विवरण: भारतवाणी, भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. भारतवाणी पुस्तक-विवरण (अभिगमन: 10 अक्टूबर 2026)।
3. चतुर्वेदी, नरेश चन्द्र. (1990). गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही'. भारतीय साहित्य के निर्माता. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी. 87 पृष्ठ. पुस्तकालय अभिलेख: दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय प्रणाली. पुस्तकालय अभिलेख (अभिगमन: 10 अक्टूबर 2026)।